सुसमाचार

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
एक

सुसमाचारों का परिचय

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका....4

नोट्स....5

I. परिचय (1:14)....5

II. साहित्यिक शैली (2:10)....5

A. शैली (3:08)....5

1. ऐतिहासिक विवरण (4:40)....5
2. यूनानी-रोमी जीवनकथा (7:40)....6
3. बाइबल-संबंधी ऐतिहासिक विवरण (15:41)....7

B. विश्वसनीयता (18:40)....7

1. पहुँच (19:41)....7
2. स्पष्टवादिता (21:45)....7
3. पुष्टिकरण (25:08)....7
4. प्रशिक्षण (28:00)....8
5. धर्मवैज्ञानिक बोध (29:23)....8
6. पवित्र आत्मा (31:14)....8

III. कलीसिया में महत्व (34:18)....8

A. संयोजन (34:32)....8

1. समानताएं (35:40)....8
2. संयोजन के सिद्धांत (41:35)....9
3. निश्चितता (43:07)....9

B. प्रमाणिकता (45:32)....9

1. विश्वासयोग्य लेखक (47:50)....9
2. प्रैरितिक अनुमोदन (48:38)....9
3. कलीसिया की गवाही (49:45)....9

IV. एकता (52:49)....10

A. समान कहानी (53:08)....10

B. यीशु (57:02)....10

1. प्रमाण (57:30)....10
2. शब्दावली (1:01:00)....11

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. चरण (1:05:08) 11

V. भिन्नता (1:10:18) 12

A. प्रत्यक्ष कठिनाइयाँ (1:10:47) 12

1. घटनाक्रम (1:11:28) 12

2. विलोपन (1:12:57) 12

3. भिन्न घटनाएँ (1:14:32) 12

4. भिन्न कथन (1:15:50) 12

B. भिन्न प्रभाव (1:18:27) 13

1. मत्ती (1:22:17) 13

2. मरकुस (1:26:03) 14

3. लूका (1:32:13) 14

4. यूहन्ना (1:39:40) 15

VI. निष्कर्ष (1:45:20) 15

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 16

उपयोग के प्रश्न 20

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (1:14)

बाइबल सम्पूर्ण इतिहास के परमेश्वर के लोगों से संबंधित सब प्रकार के अच्छे और बुरे समाचारों का ब्यौरा देती है।

सुसमाचार हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता के व्यक्तित्व और कार्य के जीवन परिवर्तित कर देने वाले विवरण हैं।

II. साहित्यिक शैली (2:10)

A. शैली (3:08)

शैली साहित्य की एक श्रेणी या प्रकार है।

1. ऐतिहासिक विवरण (4:40)

ऐतिहासिक विवरण ऐसे लोगों की कहानियां है जो अतीत में रहे, और उनके उन कार्यों और घटनाओं की कहानियां हैं जो उनके समय में घटित हुईं।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्राचीन संसार के लौकिक लेखनों में ऐतिहासिक विवरण विशेष रूप से तीन मुख्य भागों में विकसित हुए।

- आरंभ
- मध्य भाग
- अंतिम भाग

2. यूनानी-रोमी जीवनकथा (7:40)

- समानताएं
  - अगुवे के विचारों का बचाव
  - उसके कार्यों की जानकारी को निरंतर आगे बढाना
- असमानताएं
  - अभीष्ट श्रोता
  - महत्व
  - संस्कृतियां

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. बाइबल-संबंधी ऐतिहासिक विवरण (15:41)

सुसमाचार पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों के बहुत समान हैं।

B. विश्वसनीयता (18:40)

ऐसे अनेक प्रमाण हैं कि मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के पास यीशु के बारे में विश्वसनीय विवरण लिखने के स्त्रोत और प्रेरणा दोनों थे।

1. पहुँच (19:41)

सुसमाचार लेखकों के पास उनके द्वारा लिखी घटनाओं के विवरणों तक पहुँच थी।

2. स्पष्टवादिता (21:45)

हम सुसमाचारों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को उनके कार्यों में उच्च स्तर की स्पष्टवादिता में भी देख सकते हैं।

3. पुष्टिकरण (25:08)

सुसमाचार लेखकों की विश्वसनीयता में हमारा विश्वास अन्य ऐतिहासिक स्त्रोतों के पुष्टिकरण से मजबूत होता है।

- प्लिनी द यंगर
- सूटोनियस
- टैसीटस
- जूलियस अफ्रिकानस
- योसेफस

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. प्रशिक्षण (28:00)

जो प्रशिक्षण यीशु के चेलों ने प्राप्त किया था उसे उन्हें सिखा दिया होगा कि किस प्रकार उसके शब्दों और कार्यों को अच्छी तरह से संभाल कर रखें।

5. धर्मवैज्ञानिक बोध (29:23)

सुसमाचार लेखकों में मजबूत धर्मवैज्ञानिक बोध थे जिन्होंने एक सच्चे और विश्वसनीय विवरण की आवश्यकता पर बल दिया।

6. पवित्र आत्मा (31:14)

यीशु के शब्दों और कार्यों के विवरण को लिखने में सुसमाचार के लेखकों अगुवाई की पवित्र आत्मा ने की थी।

III. कलीसिया में महत्व (34:18)

A. संयोजन (34:32)

सुसमाचारों का संयोजन यह बताता है वे किस प्रकार से लिखे गए थे।

1. समानताएं (35:40)

- समदर्शी सुसमाचार : मत्ती, मरकुस और लूका
- शब्द "समदर्शी" का अर्थ है "एक साथ दिखना"

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. संयोजन के सिद्धांत (41:35)

3. निश्चितता (43:07)

B. प्रमाणिकता (45:32)

इन चारों सुसमाचारों को सदैव परमेश्वर की विश्वासयोग्य कलीसियाओं के द्वारा विशुद्ध और अधिकारपूर्ण रूप में स्वीकार किया गया।

इन चारों सुसमाचारों में आरंभिक कलीसिया के संपूर्ण विश्वास के कारण :

1. विश्वासयोग्य लेखक (47:50)

2. प्रैरितिक अनुमोदन (48:38)

3. कलीसिया की गवाही (49:45)

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. एकता (52:49)

A. समान कहानी (53:08)

सारे सुसमाचार परमेश्वर के राज्य की समान कहानी बताते हैं।

जब बाइबल यीशु के सुसमाचार के बारे में बात करती है, तो यह यीशु के बारे में शुभ सन्देश को दर्शाती है।

नए नियम के सुसमाचार "सुसमाचार" और "सुसमाचार प्रचार" जैसे शब्दों का प्रयोग परमेश्वर के राज्य को दर्शाने वाली भाषा की अपेक्षा बहुत कम करते हैं।

B. यीशु (57:02)

सुसमाचार बल देते हैं कि यीशु राजा है जो परमेश्वर के राज्य को लेकर आता है।

1. प्रमाण (57:30)

- दुष्टात्माओं पर यीशु का अधिकार
- चंगा करने और जीवित करने की यीशु की सामर्थ
- पाप क्षमा करने का यीशु का अधिकार

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. शब्दावली (1:01:00)

नए नियम के लेखकों ने परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करने के लिए बहुत सारे भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग किया है।

- प्रत्यक्ष शब्द
- संबंधित शब्द

3. चरण (1:05:08)

यीशु ने सिखाया था कि उसके द्वारा प्रदान किया गया राज्य का वर्तमान अनुभव सम्पूर्ण नहीं था।

भविष्य में एक नियत समय पर परमेश्वर का राज्य अपनी पूरी सम्पूर्णता में आएगा।

यीशु भिन्न चरणों में परमेश्वर के राज्य को ला रहा था :

- उसने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान राज्य का आरंभ कर दिया था।
- राज्य अब निरंतर जारी है जब वह स्वर्ग से राज्य को संचालित कर रहा है।
- और जब उसका पुनरागमन होगा तो इसकी पूर्णता होगी।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

V. भिन्नता (1:10:18)

चारों सुसमाचार परमेश्वर के राज्य के आगमन के बारे में समान कहानी बताते हैं, परन्तु प्रत्येक इसे अपने ही रूप में बताता है।

A. प्रत्यक्ष कठिनाइयाँ (1:10:47)

ऐसे कई स्थान हैं जहाँ सुसमाचार के वर्णन भिन्न-भिन्न बातें कहते प्रतीत होते हैं।

1. घटनाक्रम (1:11:28)

घटनाक्रम वह क्रम है जिनमें घटनाओं का वर्णन भिन्न सुसमाचारों में किया गया है।

2. विलोपन (1:12:57)

एक या अधिक सुसमाचारों में विवरणों का लोप या अनुपस्थिति।

3. भिन्न घटनाएँ (1:14:32)

भिन्न घटनाओं में पाई जाने वाली समानताएं।

4. भिन्न कथन (1:15:50)

भिन्न कथनों में कभी-कभी समान बातें पाई जाती थीं।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. भिन्न प्रभाव (1:18:27)

प्रत्येक सुसमाचार एक भिन्न लेखक के द्वारा लिखा गया जिन्होंने अपने ही रूपों में निम्नलिखित को प्रकट किया :

- दृष्टिकोण
- विषय

नए नियम की सारी सुसमाचार कहानियां :

- एक ही यीशु का वर्णन करती हैं
- भिन्न रूपों में यीशु के बारे में बात करती हैं
- यीशु की सेवकाई के भिन्न पहलुओं को विशिष्टता से दिखाती है

1. मत्ती (1:22:17)

- यीशु : इस्राएल का वह मसीहारुपी राजा जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम में की गई थी।

- यीशु का अनुसरण करना : परिवर्तित ह्रदय हमें सामर्थ और प्रेरणा दोनों देते हैं कि हम प्रेमपूर्ण, आभारी, आनंदित आज्ञाकारिता के साथ यीशु का अनुसरण करें।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. मरकुस (1:26:03)

- यीशु : परमेश्वर का दुःख उठाने वाला पुत्र जिसने परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।
    - अनेक चमत्कार
    - दुष्ट की शक्तियों पर सामर्थ

- यीशु का अनुसरण करना :
    - हम हमेशा यीशु को समझ नहीं पाएँगे
    - कठिनाईयां और दुःख मसीहियों के लिए अपरिहार्य हैं।

3. लूका (1:32:13)

- यीशु : संसार का करुणामय या तरस खानेवाला उद्धारकर्त्ता।

- यीशु का अनुसरण करना : गरीबों की देखभाल करना चाहिए, एवं उनकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करना।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. यूहन्ना (1:39:40)

- यीशु : परमेश्वर का पुत्र जो उद्धार की अनन्त योजना को पूरा करता है।

- यीशु का अनुसरण करना : परमेश्वर के प्रेम को प्राप्त करना और वैसा ही प्रेम दूसरों के प्रति दर्शाना है।

VI. निष्कर्ष (1:45:20)

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. सुसमाचारों की साहित्यिक शैली क्या है?

2. हम कैसे जान सकते हैं कि सुसमाचार ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय हैं?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. सुसमाचारों का संयोजन किस प्रकार हुआ और उनका संयोजन क्यों महत्वपूर्ण है?

4. हम कैसे जान सकते हैं की बाइबल में पाए जाने वाले चारों सुसमाचार विश्वसनीय या आधिकारिक हैं?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. चारों सुसमाचारों द्वारा बताई गई कहानी कितनी एकीकृत है?

6. चारों सुसमाचारों में यीशु का चित्रण कितना एकीकृत है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. सुसमाचारों में पाई जाने वाली भिन्नता से कौनसी कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं?

8. प्रत्येक सुसमाचार के विशिष्ट महत्व या बल क्या हैं?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के जीवन परिवर्तन करने वाले विवरणों से हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ना चाहिए?

2. सुसमाचारों की साहित्यिक शैली हमारे द्वारा उन्हें पढने के तरीके को कैसे प्रभावित करनी चाहिए?

3. सुसमाचार किस प्रकार पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों को समझने में हमारी सहायता करते हैं?

4. हम कैसे विश्वास कर सकते हैं कि सुसमाचार विश्वसनीय हैं जब उन्हें पतित मनुष्यों द्वारा लिखा गया है?

5. सुसमाचारों में पाई जाने वाली भिन्नता किस प्रकार कलीसिया में पाई जाने वाली भिन्नता की सराहना करने में हमारी सहायता करती है?

6. सुसमाचार किस प्रकार इस प्रकार की गलत शिक्षाओं को नकारने और दूर करने में हमारी सहायता करते हैं, जैसे कि महिमा में यीशु का आगमन पहले से ही हो चुका है?

7. राज्य का भावी आगमन हमें कैसा आश्वासन और आशा प्रदान करता है? इस आशा से हमारे वर्तमान जीवन किस प्रकार प्रभावित होने चाहिए?

8. इस्राएल का मसीहारुपी राजा होने के रूप में यीशु आपको किस प्रकार प्रभावित करता है?

9. हमारे अपने जीवन में कठिनाइयों, क्लेशों और कष्टों के संबंध में यीशु के कष्टों से हम क्या सीख सकते हैं?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

10. आपका जीवन किस प्रकार से प्रदर्शित करता है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है?

11. ऐसे कौनसे तरीके हैं जिनमे आप गरीबों की देखभाल कर सकते हैं और उनकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास कर सकते हैं?

12. कौनसा सुसमाचार आपका पसंदीदा है और क्यों?

13. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org